संदेश

हमारी पार्टी की 50वीं वर्षगांठ समारोहों का
क्रांतिकारी जयजयकार!

दीर्घकालीन लोकयुद्ध को देशभर में विस्तारित व तेज करने पार्टी को सैद्धांतिक, राजनीतिक एवं सांगठनिक तौर पर मजबूत करें!

हमारी पार्टी की 50वीं वर्षगांठ एवं हमारी नयी पार्टी – भाकपा (माओवादी) की 15वीं वर्षगांठ समारोहों को 21 सितम्बर से 8 नवंबर तक देशभर में क्रांतिकारी जोशखरोश एवं दृढ़संकल्प के साथ आयोजन करें!

भारतीय क्रांतिकारी कतारों एवं जनता के लिए आह्वान!

केंद्रीय कमेटी

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

हमारी पार्टी की 50वीं वर्षगांठ समारोहों का क्रांतिकारी जयजयकार!

दीर्घकालीन लाकयुद्ध को देशभर में विस्तारित व तेज करने पार्टी को सैद्धांतिक, राजनीतिक एवं सांगठनिक तौर पर मजबूत करें!

प्रिय कामरेडो एवं जनता!

हमारे देश में 1925 में कम्युनिस्ट पार्टी का गठन हुआ। उसने महान तेलंगाना सशस्त्र किसान संघर्ष का विश्वासघात कर संसदीय दलदल में फंस जाने के बाद संशोधनवादी पार्टी के रूप में तब्दील हो गयी। किंतु संशोधनवादी नेतृत्व एवं लाइन का मुकाबला करने वैकल्पिक क्रांतिकारी नेतृत्व का अभाव की वजह से क्रांतिकारी कतारें इसी पार्टी में ही अपनी अस्तित्व को जारी रखा। 1964 में भारत की कम्युनिस्ट पार्टी ने दो पार्टियों के रूप में – भाकपा एवं भाकपा (मार्क्सवादी) – विभाजित हो गयी। इन दोनों के बीच सैद्धांतिक एवं राजनीतिक अंतर कम थी। नवंबर 1964 को संपन्न भाकपा (मार्क्सवादी) की 7वीं कांग्रेस में दो लाइनों के बीच संघर्ष द्वारा इसकी नयी संशोधनवादी नीतियों का पर्दाफाश हुआ। इस तरह क्रांतिकारी कतारों में नक्सलबाड़ी के समय से ही भाकपा एवं भाकपा (मा) तथा उनके लाइन को कट्टर संशोधनवादी के रूप में मानने लगे।

विश्व सामाजवादी शिविर में उभरी ख्रुश्चेव आधुनिक संशोधनवाद के खिलाफ माओ के नेतृत्व में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा महान बहस चलाये गये; चीन में महान सांस्कृतिक क्रांति का शुरूआत हुये; कई देशों में जनांदोलनों का उभार से उथल-पुथल 1960वें दशक में संशोधनवाद एवं नया संशोधनवाद का विरोध करते हुए वैकल्पिक क्रांतिकारी लाइन को सामने लाकर कामरेड चारू मजुमदार एवं कामरेड कन्हाई चटर्जी जैसे पहली श्रेणी के महान नेताओं सहित बड़ी संख्या में माओवादी शक्तियां पटल पर आ गयी। फलतः महान नक्सलबाड़ी सशस्त्र किसान संघर्ष, उसके बाद देशभर में सशस्त्र किसान संघर्षों का उभार आया। 22 अप्रैल 1969 को मार्क्सवादी महान शिक्षक लेनिन की 100वीं जयंति

पर भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी-लेनिनवादी) एवं 20 अक्टूबर 1969 को माओइस्ट कम्युनिस्ट सेंटर (एमसीसी) को गठित किया गया। उसके उपरांत भाकपा (मा–ले) की धारा की सच्ची क्रांतिकारी शक्तियां 22 अप्रैल 1980 को भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) का गठन एवं 1998 में पीपुल्सवार पार्टी एवं भाकपा (मा–ले) पार्टी यूनिटी एकताबद्ध होकर नयी भाकपा (मा–ले) [पीपुल्सवार] का गठन हुआ। इसी तरह एमसीसी भी सच्ची मार्क्सवादी-लेनिनवादी ग्रुप - आरसीसीआई (एम), आरसीसीएम, भाकपा (मा–ले) (सेकंड सीसी) एवं आरसीसीआई (मालेमा) (सांगठनिक कमेटी) से एकता कायम कर 2003 में एमसीसीआई के रूप में गठित हुए। एमसीसीआई एवं भाकपा (मा–ले) (पीपुल्सवार) एकताबद्ध होकर 21 सितंबर 2004 को नयी पार्टी भाकपा (माओवादी) का उद्‌भव हुआ। इस तरह हमारे देश में दो मुख्य क्रांतिकारी धाराओं का विलय होकर 1925 से निहित भारत की कम्युनिस्ट आंदोलन के लंबे इतिहास के सभी क्रांतिकारी पहलुओं का सच्ची निरंतरता के रूप में सच्ची क्रांतिकारी सर्वहारा पार्टी भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) का गठन हुआ। इस तरह हमारे देश में एक ही क्रांतिकारी पार्टी, एक ही सर्वहारा जनसेना (पीएलजीए) एवं एक ही राजनीतिक चरित्र से लैस क्रांतिकारी जनसंगठनों एवं नये राजनीतिक सत्ता के संस्थाओं अस्तित्व में आयी। उसके बाद उसने सच्ची कम्युनिस्टों को एकताबद्ध करने का इस सिलसिले को जारी रखा एवं दिसंबर 2013 में भाकपा (मा–ले) नक्सलबाड़ी के साथ एकता कायम किया।

भाकपा द्वारा आयोजित छः कांग्रेसों, भाकपा (मार्क्सवादी) द्वारा आयोजित 7वीं कांग्रेस की निरंतराता के रूप में मई 1970 में भाकपा (मा–ले) द्वारा आयोजित 8वीं कांग्रेस एवं जनवरी 2007 में भाकपा (माओवादी) द्वारा आयोजित ऐतिहासिक एकता कांग्रेस–9वीं कांग्रेस संपन्न हुए। इस कांग्रेस ने मौलिक दस्तावेजों को पारित कर सैद्धांतिक, राजनीतिक, सैनिक एवं सांगठनिक लाइनों का समृद्ध बनाया। मालेमा की रोशनी में पार्टी अपनी कमी–कमजोरियों को पहचान कर शुद्धीकरण अभियान चलाया।

इस तरह 50 सालों से भाकपा (माओवादी) गठित होकर, कई ज्वार–भाटों, कष्ट–तकलीफों, गंभीर नुकसानों व पीछे–हटों के साथ आगे बढ़ी। उसने लहरों की तरह आगे बढ़ते हुए दीर्घकालीन लोकयुद्ध के जरिए नवजनवादी क्रांति को जारी रखकर भारत के मजदूर, किसान, मध्यम वर्ग आदि उत्पीड़ित जनता एवं उत्पीड़ित तबकों को नेतृत्व प्रदान करने के लिए लगातार प्रयास कर रहा है। एक

एक समय उसने बड़े छलांग लगाते हुए, उच्च एवं उल्लेखनीय जीत भी हासिल की। भारत के प्रतिक्रियावादी दलाल नौकरशाह पूंजीपति एवं सामंती शासक वर्गों ने साम्राज्यवादियों के हितों, अपने हितों को पूरा करने के लिए लगातार एवं पूर्ण स्तर पर किये जाने वाले प्रतिक्रांतिकारी हमलों का हमारी पार्टी ने जनता की मदद से जनयुद्ध के जरिए सामना करते हुए आगे बढ़ रही है।

इसलिए भाकपा (माओवादी) की 15वीं स्थापना वर्षगांठ समारोहों को भाकपा (मा–ले) एवं एमसीसी के विरासि के तौर पर उन पार्टियों के 50वीं स्थापना दिवसों के साथ जोड़कर आयोजित करना चाहिए। इन वर्षगांठ समारोहों का विशेषता को ध्यान में रखकर, 21 सितंबर से 8 नवंबर तक आयोजित करना चाहिए। इसी समय में 1 अक्टूबर को जनचीनी क्रांति की 70वीं वर्षगांठ का आयोजित करना चाहिए।

हमारी पार्टी की 50वीं वर्षगांठ के अवसर पर मालेमा की रोशनी में पार्टी का उज्ज्वल इतिहास का अध्ययन में हमारी पार्टी ने ऊपर से नीचे तक पार्टी के सभी कमेटियां एवं यूनिटें शामिल होने एवं बहुत ही खून बहाकर आर्जित हमारे समृद्ध अनुभवों से सुशिक्षित होने हमारी केंद्रीय कमेटी आह्वान करती है। नवजनवादी क्रांति सफल बनाने वाली, उसके बाद समाजवाद–साम्यवाद को स्थापित करने वाली भविष्य लक्ष्य के साथ हमारी पार्टी ने अपने अनुभव से प्राप्त अथक एवं वीरोचित लड़ाकू स्फूर्ति के साथ इन वर्षगांठ समारोहों को सफल बनाने का आह्वान करती है। इस अवसर पर विगत 50 वर्षों में क्रांतिकारी आंदोलन द्वारा हासिल सफलताओं को ग्राम स्तर से लेकर देशभर में पर्चों, पोस्टरों, बैनरों एवं बुकलेटों द्वारा, सांस्कृतिक प्रदर्शनों द्वारा प्रचारित–प्रसारित करने, रैलियों, जनसभाओं, संगोष्ठियों, फोटो एवं कला प्रदर्शनों को बड़े पैमाने पर आयोजित करने एवं कम्युनिज्म अपराजित है के संदेश को प्रचारित–प्रसारित करने का अपील करती है।

विगत 50 वर्षों में हमारा देश में नवजनवादी क्रांति, अंत में विश्वभर में समाजवाद–साम्यवाद को सफल बनाने के लक्ष्य से सैकड़ो नेतृत्वकारी कामरेड, हजारों पार्टी सदस्यों एवं कई हजार क्रांतिकारी जनता शहीद हुए। विगत एक साल में ही 115 कामरेड शहीद हुए। इसमें 40 महिला कामरेड थी। पार्टी की 50वीं वर्षगांठ समारोहों के अवसर पर भारतीय क्रांति के महान नेता, पार्टी संस्थापक एवं शिक्षक कामरेड चारू मजुमदार एवं कामरेड कन्हाई चटर्जी सहित जनता के लिए अपनी सबकुछ देकर, अपनी अंतिम सांस तक पार्टी एवं क्रांति के लिए

सेवा किए क्रांतिकारी वीरों एवं वीरांगनओं तथा अमर शहीदों को कोटि-कोटि क्रांतिकारी अभिवादन पेश करें! इसी अवसर पर विश्व समाजवादी क्रांति को जीतने के लक्ष्य से विभिन्न देशों के माओवादी पार्टियों एवं संगठनों के नेतृत्व में जारी आंदोलनों में अपने जान न्योछावर करने वाले वीरयोद्धाओं को हमारी केंद्रीय कमेटी क्रांतिकारी श्रद्धांजलि अर्पित करती है। शहीदों की निष्ठा एवं आत्मबलिदान की चेतना के परिणास्वरूप ही भारतीय जनता के क्रांतिकारी सफलताएं संभव हो पायी हैं। आइये! उनकी आदर्शों से स्फूर्ति हासिल करें एवं उनकी निस्वार्थ त्याग स्फूर्ति का अनुसारण करें!

प्रतिक्रियावादियों एवं विश्वासघातियों ने लगातार यह कहते हुए जनता एवं क्रांतिकारी शक्तियों का निष्क्रिय करने का विफल प्रयास कर रहा है कि माओवादी पार्टी ने दीर्घकालीन लोकयुद्ध के जरिए नवजनवादी क्रांति जारी रखा है, किंतु 50 सालों के बाद भी पूर्ण जीत हासिल नहीं कर पायी। उन्होंने इस सच्चायी पर परदा डालने चाहते हैं कि भारतवर्ष में मौजूदा अर्ध-औपनिशेविक एवं अर्ध-सामंती व्यवस्था लगातार सड़-गल रही है। दरअसल कालग्रस्त इस व्यवस्था मरणावस्था में है, उसे नवजनवादी क्रांति के जरिए जड़ से उखाड़कर नयी व्यवस्था को स्थापित करनी चाहिए।

इस अवसर पर हमारी पार्टी ने वर्तमान मौजूदा अपनी शक्ति एवं हासिल किए गए सफलताओं को बरकरार रखते हुए, अनुकूल वस्तुगत अंतरराष्ट्रीय एवं देशीय परिस्थितियों को इस्तेमाल करते हुए आगामी वर्षों में अपनी ताकत को बढ़ने एवं बड़ी सफलताएं हासिल करने हेतु अपनी कार्य को पुनःसांचे में डालने के लिए और निष्ठा से प्रयास करना होगा।

सशस्त्र कृषि क्रांति की धुरी पर नवजनवादी क्रांति के लाइन के अनुसार व्यापक उत्पीड़ित जनता को जागरूक करना, गोलबंद करना एवं संगठित करना, जुझारू रूप से उतारने द्वारा ही भारतीय क्रांति में पार्टी के नेतृत्वकारी अपनी असलियत एवं दक्षता को साबित कर सकती है। नेतृत्व की इस दक्षता व्यापक तौर पर जनता को राजनीतिक पटल पर लाने में, पीएलजीए द्वारा संचालित कार्यनीतिक जवाबी हमलों (एम्बुश व रेड आदि) में, गैर-कानूनी व कानूनी जनवादी आंदोलनों में ही बहुत हद तक प्रकट होती है। ये हमारी आत्मगत शक्तियों को और मजबूत करती हैं एवं दुश्मन को और कमजोर करती हैं। इसलिए क्रांतिकारी आंदोलन द्वारा हासिल सफलताओं का पार्टी, जनसेना (पीएलजीए) एवं विभिन्न क्रांतिकारी जनसंगठनों-राजनीतिक सत्ता के इकाइयों का गठित करने,

विस्तारित करने, संगठित करने से, जनांदोलनों एवं गुरिल्ला युद्ध का विकास करने से, आंदोलन के इलाकों का विस्तारित करने से तुलना करना चाहिए। सशस्त्र क्रांति को आगे बढ़ाने के लिए जनसेना एवं जनयुद्ध अनिवार्य है। उनमें ऐसी विशिष्ठ लक्षण निहित हैं एवं उन्होंने ऐसी विशिष्ठ भूमिका अदा करते हैं। क्रांतिकारी आंदोलन में भारी संख्या में जनता को गोलबंद करने एवं दुश्मन पर लड़कर जीत हासिल करने के लिए वे जरूरी है।

50वीं वर्षगांठ के अवसर पर पार्टी की संगठितीकरण (consolidation) अभियान को ऊपर से नीचे तक सभी स्तरों के कमेटियां लेनी चाहिए। अपने दायरे में पार्टी निर्माणों पर गहराई से चर्चा कर उन्हें मजबूत करने के लिए जरूरी निर्णय लेना चाहिए। पार्टी में जो गैरसर्वहारा रुझान व गलतियां जारी है, इस नेपथ्य में पार्टी में सैद्धांतिक, राजनीतिक, सैनिक एवं सांगठनिक स्तर तथा कम्युनिस्ट मूल्यों को बढ़ाकर गैरसर्वहारा रुझानों को सुधारने के लक्ष्य से एवं नुकसानों को न्यूनतम स्तर तक घटाने के लक्ष्य से इस अभियान को सफलतापूर्वक संचालित करने सीसी अपील करती है।

कालग्रस्त भारतीय अर्ध-औपनिवेशिक एवं अर्ध-सामंती व्यवस्था के खिलाफ हमारी पार्टी ने अगर दीर्घकालीन लोकयुद्ध का रणनीतिक लाइन को लागू करते हुए नवजनवादी क्रांति में जीत हासिल करना चाहती है तो, उसने तीन जादुई हथियारों का जनता को जागरूक करने, गोलबंद करने एवं संगठित करने तथा दुश्मन को हराने के लिए निपुणता से इस्तेमाल करना चाहिए।

पहला हथियार भाकपा (माओवादी)। वह सर्वहारा का अगवा दस्ता है। पार्टी ने जनसेना-जनयुद्ध का, संयुक्तमार्चा-व्यापक जनांदोलन का एवं सभी क्षेत्रों का नेतृत्व प्रदान करती है। उसने विभिन्न निर्माणों एवं आंदोलनों का समन्वय करती है। दूसरा हथियार जनसेना-जनयुद्ध (सशस्त्र क्रांतिकारी आंदोलन)। ये उच्च सांगठनिक एवं संघर्ष के रूप हैं। तीसरा हथियार संयुक्तमोर्चा। यह लाखो-करोड़ो जनता को क्रांति में गोलबंद करने, क्रांतिकारी युद्ध में या साम्राज्यवादियों के दुराक्रमण के खिलाफ लड़ने वाले देशभक्त युद्ध में दुश्मन को अलगाव में डाल कर, कमजोर कर एवं उन्हें नुकसान पहुंचाने के लिए विभिन्न प्रकार के संयुक्तमोर्चा के तरीके को बहुत ही चलाकी से सामने लाती है।

क्रांतिकारी आंदोलन में बड़ी सफलताएं हासिल करने के लिए हमारी पार्टी को विस्तारित व संगठित करना चाहिए। विभिन्न स्तरों में पार्टी को विस्तारित करने के लक्ष्य से हमने भर्ती से संबंधित व्यावहारिक योजना तैयार करनी

चाहिए। पार्टी को संगठित करने के लक्ष्य से सही शिक्षा योजना तैयार करनी चाहिए। पार्टी में सर्वहारा से, खेतिहर मजदूर एवं गरीब किसानों से, अर्धश्रमिकों से, मुख्य उत्पीड़ित वर्ग व तबके के रूप में रहे महिलाओं, दलितों, आदिवासियों व धार्मिक अल्पसंख्यकों के पुरोगामी शक्तियों से भर्ती करने पर अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए। उनसे पार्टी के नेतृत्व को विकसित करना चाहिए। पार्टी का विस्तारित करने का मतलब है शहरों, मैदानी, वनांचल-ग्रामीण इलाकों में रहे विभिन्न क्रांतिकारी जनसंगठनों (मजदूर, किसान, छात्र, युवा, महिला, बुद्धिजीवी आदि संगठनों) से एवं पीएलजीए (जनसेना) से योग्यता-प्राप्त कामरेडो को उम्मीदवार सदस्यों के रूप में भर्ती करना। पार्टी को संगठित करने का मतलब है सही समय में उम्मीदवार सदस्यों को पूर्ण-रूप पार्टी सदस्यों के रूप में पदोन्नति देना। इसके लिए उम्मीदवारों के रूप में रहते समय में ही पार्टी प्राथमिक पाठ्यक्रम में उनकी (प्राथमिक पार्टी यूनिटों, ग्राम/फैक्टरी, बस्ती, कालेजी पार्टी कमेटियों को) शिक्षा पूरा करना, ताकि पार्टी प्राथमिक यूनिटों में उन्हें और सक्रिय किया जा सके एवं जिम्मेदारियां सौंपा जा सके। पूरोगामी जन कार्यकर्ताओं को सही समय में पार्टी में पेशेवर क्रांतिकारियों के रूप में भर्ती करना चाहिए। ऊपर से नजदीकी मार्गदर्शन देते हुए सैद्धांतिक शिक्षा सही तरीके से एवं सही समय पर देने से पार्टी के नेतृत्वकारी एवं सदस्य और ज्ञानप्राप्त कर सकते हैं, निर्णायक एवं अनुभव-प्राप्त कामरेडों के रूप में उभर सकते हैं। वे अपने राजनीतिक एवं सांगठनिक कार्य तहेदिल से, जुझारू रूप से एवं सक्षम तरीके से निभा सकते हैं। अन्यथा सभी प्रकार का कार्य नुकसान होता है। रोजमर्रा के कामों में डूब जाने की वजह से सैद्धांतिक शिक्षा नजरअंदाज किया जा रहा है। सैद्धांतिक एवं राजनीतिक शिक्षा देकर हमारी कैडर पालिसी के मुताबिक उन्हें एसी/पीपीसी/शहरी कमेटियों में पदोन्नति कर मजबूत करना चाहिए। सभी स्तरों में पार्टी कमेटियों को संगठित करते हुए, हर स्तर पर नये नेतृत्व का विकसित करना चाहिए। दुश्मन की परिस्थिति को ध्यान में रखकर रक्षा व्यवस्था को व्यवस्थित कर हमारी कैडर पालिसी के मुताबिक नीचे से ऊपरी स्तर तक सैद्धांतिक एवं राजनीतिक शिक्षा बेहतर करने के लिए सीसी द्वारा बनायी गयी सिलाबसों के अनुसार निर्धारित समयावधि में अध्ययन कक्षाएं चलानी चाहिए। इस अभियान के जरिए हमारी पार्टी, पार्टी के नेतृत्व, जनसेना एवं संयुक्तमोर्चा को संख्या में एवं गुणवत्ता में विकसित किया जाना चाहिए।

हमारी केंद्रीय कमेटी सशस्त्र क्रांति एवं समूची पार्टी का सेनापतियों का

समूह (general staff) के रूप में एवं जनाधार का विस्तारित एवं मजबूत करने, आंदोलन धक्का खाये हुए इलाकों को फिर से पुनर्जीवित करने, नये इलाकों में विस्तारित करने में निर्णयाक भूमिका निभानी चाहिए। सशस्त्र संघर्ष जारी ग्रामीण इलाकों में दुश्मन के योजनाओं, कार्यनीति, तैनाती, ऑपरेशनों को नीचे से ऊपर तक पार्टी कमेटियों एवं पीएलजीए यूनिटों ने अवश्य ही नजदीक से अध्ययन कर सही आत्मरक्षात्मक-आक्रामक योजनाओं को तैयार करनी चाहिए। पार्टी यह सुनिश्चित करना चाहिए कि पीएलजीए द्वारा अपने प्रधान, द्वितीय एवं बुनियादी बलों से संबंधित कर्तव्यों एवं नीतियों को अवश्य लागू किया जाय। जनकार्य (मासवर्क) एवं कार्यनीतिक जवाबी हमलों के बीच सही संतुलन पर ध्यान देना चाहिए।

पार्टी कमेटियां दुश्मन की परिस्थितियों एवं क्रांतिकारी आंदोलन में आने वाली बदलावों एवं अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों का मंथन करना चाहिए। किसी भी सूरत में अपने पैरों पर खड़े होने का सिद्धांत के मुताबिक अपने आप को बचाते हुए सशस्त्र क्रांतिकारी संघर्ष को आगे बढ़ानी चाहिए।

केंद्रीय स्तर से जिला स्तर तक नेतृत्वकारी कमेटियां इन बातों को सुनिश्चित करना चाहिए कि शहरों में, मैदान एवं वनांचल-ग्रामीण इलाकों में पार्टी निर्माण विकसित हो, लगातार शहरों से ग्रामीण इलाके में व पीएलजीए (जनसेना) में पार्टी के युवा नेतृत्व एवं सदस्यों को भेजा जाय, ताकि कुछ राजनीतिक, हस्तशिल्पी एवं तकनीकी क्षमताएं वहां बढ़ाया जाय।

हमने लगातार योजना के तहत सैद्धांतिक संगठितीकरण को जारी रखना चाहिए। हमने विभिन्न स्तरों में, विभिन्न इलाकों/क्षेत्रों में किये जाने वाले प्रयास में हमारे अनुभवों को नियमित रूप से मूल्यांकन करना चाहिए। पार्टी के नेतृत्वकारी कमेटियों ने सैन्य निर्माण, प्रशिक्षण, युद्ध कार्रवाइयों का संचालन आदि फौजी कार्य पर, क्रांतिकारी भूमि-सुधारों का अमल पर, सामंतवाद-विरोधी, साम्राज्यवाद-विरोधी जनांदोलनों का संचालन, जन निर्माणों का गठन, संगठितीकरण आदि जनकार्य पर, लालप्रतिरोध इलाकों, गुरिल्ला जोनों, गुरिल्ला बेस-आधार इलाकों का निर्माण आदि मामलों पर हमारे कार्य को नियमित रूप से समीक्षा कर सकारात्मक एवं नकारात्मक अनुभवों से सबक लेना चाहिए।

देशभर में हमारा आंदोलन विभिन्न इलाकों में विभिन्न स्तरों में असमान वृद्धि के साथ जारी है। इसलिए संबंधित इलाकों के ठोस परिस्थितियों को ध्यान में रखकर इसके मुताबिक पार्टी ने अधिकतम जनता के साथ घनिष्ठ संबंध साध

ाकर सभी प्रकार के आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक आंदोलनों का निर्माण करना चाहिए। इन आंदोलनों में शामिल होने वाले जनता में राजनीतिक जागरूकता बढ़ाकर पार्टी को सांगठनिक तौर पर नियमित रूप से संगठित करना चाहिए। गुप्त व खुला जनसंगठनों का गठन कर, इनमें अगवा शक्तियों को पार्टी में भर्ती करना चाहिए।

जनता में सांगठनिक कार्य बहुत महत्वपूर्ण है। क्योंकि जनता में उचित निर्माण के सिवा काम करना स्वत:स्फूर्तता होती है। इससे अपेक्षित परिणाम भी हासिल करना संभव नहीं है। पार्टी निर्माण को विस्तारित करना भी संभव नहीं है। उचित निर्माण होने से योजनाबद्ध ढंग से काम करना संभव होगा। वे जनता में हमारी पार्टी प्रभाव को संगठित कर सकते हैं।

जनसंगठनों में चार वर्गों – मजूदर वर्ग, किसान, निम्नपूंजीपति वर्ग एवं राष्ट्रीय पूंजीपति वर्ग – को संगठित करना चाहिए। लेकिन हमने मुख्य रूप से बुनियादी वर्गों पर निर्भर करना चाहिए। हमने गुप्त क्रांतिकारी जनसंगठनों का गठन करना चाहिए। उसी समय खुला राजनीतिक आंदोलनों एवं खुला जनसंगठनों को गठित करने एवं विकसित करने का प्रयास भी करना चाहिए।

नये पार्टी सेल, पार्टी ब्रांच, ग्राम/फैक्टरी/कालेज/बस्ती पार्टी कमेटियों को, मिलिशिया, पीएलजीए यूनिटों, विभिन्न स्तरों के आरपीसीयों को निर्माण करना; दुश्मन के दमन में नुकसान हुए निर्माणों को पुन:संगठित करना, मजबूत करना; गुप्त काम–काज को बेहतर करना, कमियों को सुधारना; जनवादी केंद्रीयता एवं अनुशासन को, पार्टी की एकता को मजबूत करना; पार्टी की गुप्त समन्वय तंत्र एवं सुरक्षा को मजबूत करना आदि को सही रूप से लागू करने द्वारा ही पार्टी की संगठित शक्ति बढ़ेगी। सभी स्तरों के पार्टी के नेतृत्वकारी कतारों ने सर्वहारा की क्रांतिकारी दृढ़ता एवं एकता के साथ अपने कर्तव्य निभाना चाहिए। स्वार्थ त्याग एवं कम्युनिस्ट स्फूर्ति के साथ कठिन परिस्थितियों में भी कर्तव्यों को निभाना होगा।

हमारी पार्टी ने पहले से ही मालेमा को अध्ययन करते हुए भारतवर्ष के ठोस परिस्थितियों के मुताबिक सृजनात्मक रूप से लागू कर रही है। किंतु इस अध्ययन ठोस परिस्थितियों को, भारत की उत्पादन प्रणाली में उभर रहे रुझानों, घटनाक्रमों, वर्ग शक्तियों का संयोजन एवं संबंधों को समझने के लिए समय–समय पर (periodically) सामाजिक अध्ययन, वर्ग विश्लेषण अवश्य करना होगा। इस विषय में जारी हमारी कमी को सुधारना होगा। बदलती परिस्थितियों के मुताबिक

लगातार कार्यनीति को बेहतर करना चाहिए।

पार्टी में सर्वहारा वर्ग विचारधारा एवं सांचे में पुनराकार नहीं पाने वाली निम्नपूंजीपति विचारधारा के बीच संघर्ष लगातार होता रहता है। पार्टी में कहीं न कहीं बाहर की सामाजिक वास्तविकता प्रतिबिंबित होती है। पार्टी के सदस्यों में जागरूकता में असमानता रहती है। उसमें अगवा, मध्यम एवं पिछड़े तबके होती हैं। फलतः सांचे में पुनराकार नहीं पाने वाली कुछ निम्नपूंजीपति शक्तियां अपने संकुचित स्वार्थ एवं व्यक्तिवादी विचारों ऐसे ही चिपके रहते हैं। ये सर्वहारा पार्टी में सर्वहारा-विरोधी विचारों का संबंधित स्तरों में बढ़ावा देने प्रयास करते हैं। इसलिए इस तरह के गैर-सर्वहारा सोच एवं रुझानों के खिलाफ हमने लगातार सही तरीके अपनाकर संघर्ष जारी रखना चाहिए।

पार्टी के नेतृत्व में पीएलजीए के विभिन्न फारमेशनों द्वारा गुरिल्ला आक्रामक ऑपरेशन संचालित किये जाएंगे। वे जब कार्यान्वित होते हैं, तब विभिन्न परिस्थितियों में दुश्मन के साथ संघर्ष करने के दौरान, विभिन्न संघर्षों को सफल बनाने का अपना मुख्य कर्तव्य निभाने में पीएलजीए को रोकने वाले पहलू क्या है, इसके बारे में हमारी पार्टी कमेटियों एवं पीएलजीए कमांड सही तरीके से विश्लेषण कर, कमी-कमजोरियों को पहचान कर, उचित सबक लेकर जरूरी सैद्धांतिक, राजनीतिक, सैनिक एवं सांगठनिक प्रयास करके, फिर ऑपरेशनों को सफलतापूर्वक चलाना चाहिए।

हमने रणनीतिक आत्मरक्षात्मक चरण में गुरिल्ला युद्ध चला रहे हैं। इसलिए गुरिल्ला युद्ध के कार्यनीति एवं नियमों पर दृढ़ता से अडिग रहना चाहिए। टेरेन पर पकड़ हासिल करना, केंद्रीकरण-विकेंद्रीकरण, स्थल बदलने की कार्यनीति, हमेशा दुश्मन के कमजोरियों को पहचानना एवं जीत हासिल करने के लक्ष्य से उन कमजोरियों पर सरप्राइज हमला करना चाहिए। जनता की मदद से दुश्मन के छोटे यूनिटों का सफाया कर, हथियार तथा अन्य युद्ध सामग्री जब्त करना चाहिए।

पीएलजीए यूनिटों को छोटे यूनिटों के रूप में अति-विकेंद्रीकरण करने से बचना चाहिए क्योंकि दुश्मन के सूचना आधारित हमलों एवं घेरा डालो-नाश करो हमलों में उनकी सुरक्षा खतरे में पड़ सकती है। पीएलजीए ने सख्ती से सक्रिय आत्मरक्षात्मक तरीके लागू करना चाहिए। बेवजह हमारे गुरिल्ला यूनिटों एवं पार्टी कैडरों की गुप्तता खुलना नहीं चाहिए एवं महत्वपूर्ण सभी समाचार को अवश्य ही गुप्त रखना चाहिए। जनता एवं मिलिशिया को गुरिल्ला युद्ध में विभिन्न कर्तव्य निभाने, एम्बुश व रेड में खुफिया समाचार इकट्टा करने, दुश्मन के

पृष्ठभूमि में जाकर ऑपरेशन चलाने एवं गुरिल्ला यूनिटों का सक्रिय मदद देने लायक उन्हें राजनीतिक एवं सैनिक प्रशिक्षण देकर संगठित करना चाहिए।

पीएलजीए के बल दुश्मन के बरतर बलों द्वारा जब घेराव किया जाता है, तब वह तुरंत उस घेराव से बाहर आना चाहिए। वह दुश्मन के भीतरी घेरे में नहीं बल्कि बाहरी घेरे में जाकर लड़ना चाहिए।

विभिन्न गुरिल्ला यूनिटों के बीच कमांड, कंट्रोल, कम्युनिकेशन एवं समन्वय को मजबूत करना चाहिए। राजनीतिक एवं सैनिक पहलकदमी हाथ में रखना चाहिए। दुश्मन के गतिविधियों को नजदीक से जांच करना चाहिए। गुरिल्ला युद्ध में एवं सहयोग में हर एरिया एवं यूनिट की भूमिका का सभी कामरेड चिन्हित करना चाहिए। विभिन्न स्तरों के कामरेडों का सैनिक विज्ञान, कमांडरों की क्षमता, राजनीतिक एवं सैनिक प्रशिक्षण बढ़ाना चाहिए एवं आकलन करने की तौर–तरीकों के बारे में, राजनीतिक व सैनिक संश्लेषण करने की तौर–तरीकों के बारे में स्पष्टता देनी चाहिए। जनता के रोजमर्रा आंदोलनों का जनयुद्ध की मदद देने एवं मजबूत करने की तरह समन्वय करना चाहिए।

रणनीतिक एवं कार्यनीतिक संयुक्तमोर्चे का नेतृत्व प्रदान करने वाली पार्टी कमेटियों को संगठित करने पर हमने अधिक से अधिक ध्यान देना चाहिए। रणनीतिक संयुक्तमोर्चा का स्वयं पार्टी ही नेतृत्व प्रदान करता है, इसलिए उसे अवश्य गुप्त रूप से गठित करना चाहिए। कार्यनीतिक संयुक्तमार्चों में पहलकदमी हमारे हाथों में रखते हुए काम करने की स्पष्टता देनी चाहिए।

दुश्मन के हमले गंभीर होने, लेकिन जनाधार होने वाले जगहों पर पार्टी के नेतृत्व में विभिन्न स्तरों के पीएलजीए कमांडों एवं यूनिटों को गठित कर उनके नेतृत्व में मुख्य रूप से गुप्त तौर–तरीके अपनाकर गुरिल्ल युद्ध एवं जनांदोलनों को तेज करना चाहिए। जल–जंगल–जमीन जैसे जनता के मौलिक समस्याओं पर, राज्य का दमन के खिलाफ विभिन्न आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक समस्याओं पर जनांदोलनों का निर्माण करना चाहिए। ये आर्थिकवाद एवं सुध ारवाद का शिकार न हो जाय, इसके लिए पहले से ही राजसत्ता को कब्जा करने की राजनीति से जनता को जागरूक करनी चाहिए। जनता को हथियारबंद करते हुए उन्हें व्यापाक रूप से मिलिशिया में संगठित करना चाहिए। दुश्मन की राजसत्ता को जहां धक्का पहुंचाया जाता है, वहां यथासंभव शीघ्र क्रांतिकारी राजसत्ता के इकाइयों–क्रांतिकारी जन कमेटियों को गठित व संगठित करने पर अपना ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

प्रिय कामरेडो एवं जनता!

विश्व पूंजीवादी आर्थिक संकट ने विश्वभर में गंभीर प्रभाव डाल रहा है। साम्राज्यवादियों ने इससे उबरने के लिए भूमंडलीकरण नीतियां, राजनीतिक एवं सैनिक क्षेत्रों में प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से हस्तक्षेप करने की नीतियां अपना रहे हैं एवं दुराक्रमणकारी युद्ध चला रहे हैं। साम्राज्यवादी शोषणकारी नीतियों की वजह से विश्वभर में आर्थिक असमानताएं तेजी से बढ़ रही हैं। विश्व में 62 धनाड्यों की संपदा इतना बढ़ गयी है कि विश्व के आधी आबादी की संपदा से वह बराबर है। सभी सरकारें दिवालिया घाटे बजट की नीतियां लागू करते हुए, जन कल्याणकारी योजनाओं एवं सेवाओं में भारी कटौती करने की वजह से श्रमिक जनता की जिंदगियां और दूभर हो गयी हैं। मजदूरों एवं मध्यम वर्ग के लोगों की वास्तविक वेतन घट रहे हैं। बेरोजगारी गंभीर स्तर पर पहुंच गयी है। फलतः पूजीवादी एवं साम्राज्यवादी देशों में विशेषकर यूरोप में मजदूर एवं मध्यम वर्ग के आंदोलन दिन-ब-दिन तेज होते जा रहे हैं।

साम्राज्यवादियों की हस्तक्षेप से हो रहे युद्धों के कारण पश्चिमाशिया, अफ्रीका एवं लातीन अमेरिका के देशों में करोड़ों जनता शरणार्थी बनकर तंगहाली में जी रहे हैं एवं बेहद खतरनाक परिस्थितियों में निर्ममता से मृत्यु की मुह में धखेला जा रहे हैं। इसका मुख्य कारण बने साम्राज्यवादी नीतियों के खिलाफ विरोध प्रदर्शन एवं प्रतिरोध संघर्षों का उभार देखने को मिल रहा है। राष्ट्रीयताओं को आत्मनिर्णय अधिकार के लिए कुर्द जनता ने सशस्त्र क्रांति चला रही है। फिलिस्तीनी राष्ट्रीय-मुक्ति संघर्ष जुझारू रूप से जारी है। अफगानिस्तान में तालिबन के सशस्त्र संघर्ष दशकों से जारी है, उसने अभी अमेरिकी साम्राज्यवादियों को झुकाने में कामयाब हासिल कर रही है। नवजनवादी क्रांति के लाइन को लेकर सशस्त्र क्रांतिकारी संघर्षों का फिलिप्पींस, भारत, तुर्की, पेरू आदि देशों में माओवादी पार्टियां नेतृत्व कर रही हैं। इस तरह कई आंदोलन विश्वभर में अलग-अलग देशों में व्यापक ग्रामीण इलाकों में स्वयं अपने जनयुद्ध को शुरू करने लोगों को उत्साहित कर रही हैं।

विश्व बाजार का पुनर्विभाजन करने एवं प्राकृतिक संसाधनों को लूटने के लिए साम्राज्यवादियों के बीच कुत्तों का संघर्ष व्यापार एवं सैनिक क्षेत्रों में तेज होता जा रहा है। ब्रेग्जिट के घटनाक्रम साम्राज्यवादियों के बीच अंतरविरोध की तीव्रता को दर्शाती है। अमेरिका आर्थिक क्षेत्र में सामने लाने वाली संरक्षणवादी नीतियों को बाकी साम्राज्यवादी देश तीव्र विरोध कर रही हैं। अमेरिका एवं चीन

के बीच व्यापार युद्ध बेहद तीव्रता से जारी है। पश्चिमाशिया, हिंदू-प्रशांत इलाकें साम्राज्यवादियों के बीच अंतरविरोध का केंद्र बना हुआ है। पश्चिमाशिया में इरान एवं पूर्वी एशिया में उत्तर कोरिया को एवं इनको बल देने वाले रूसी एवं चीनी साम्राज्यवादियों को सामना करते हुए विश्व पर अपने दबदबे को कायम रखने अमेरिका की विफल कोशिशों की वजह से तनाव बढ़ रहा है। विशेषकर पश्चिमाशिया में अमेरिका के नहीं झुकने वाले एवं स्वतंत्र नीतियां अपनाने वाले इरान को निशाना बनाकर उसपर कई आर्थिक पाबंदियां लगा दिया है। स्वायत्तता प्राप्त हांगकांग के जन आकांक्षाओं को कुचलते हुए चीनी सरकार द्वारा लायी गयी 'प्रत्यर्पण बिल' के खिलाफ जनउभार आयी है, बावजूद इसने एक तरह से साम्राज्यवादियों के बीच अंतरविरोधों का प्रतिबिंबित करता है।

विश्व पूंजीवादी आर्थिक संकट के कारण विश्वभर में सुलगते संघर्ष क्रांतिकारी शक्तियों का उद्भव एवं वृद्धि के लिए अनुकूल हैं। साम्राज्यवादी नये औपनिवेशिक शोषण के तहत मुट्ठीभर बहुराष्ट्रीय कंपनियां विश्वभर में अलग-अलग देशों में अपनी उत्पादन इकाइयों को विभाजित कर सर्वहारा का तीव्र शोषण करते हुए सुपर मुनाफे आर्जित करना ही नहीं, बल्कि विकसित एवं विकासशील देशों के सर्वहारा के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ा रही हैं। इस घटनाक्रम ने विश्वभर में सर्वहारा की एकता एवं एकताबद्ध संघर्षों की आवश्यकता को मजबूती से उजागर कर रही है। आगामी समय में नवजनवादी एवं समाजवादी क्रांतियों को पुनर्जीवित करने हेतु सर्वहारा का नेतृत्व प्रदान करने की स्थिति बढ़ रही है। इस अनुकूल स्थिति का इस्तेमाल कर सभी देशों के सर्वहारा की क्रांतिकारी शक्तियां सैद्धांतिक, राजनीतिक एवं सांगठनिक रूप से मजबूत होते हुए साम्राज्यवाद-विरोधी संघर्ष का नेतृत्व प्रदान करने की आवश्यकता है। इन्होंने विश्वजनीन मालेमा सिद्धांत को लगातार अध्ययन करना चाहिए। अपने देशों के क्रांतिकारी विशिष्ट लक्षणों का विश्लेषण करने एवं मान्यता देकर ठोस परिस्थितियों से मालेमा को सृजनात्मक रूप से जोड़ना चाहिए।

विश्व पूंजीवादी संकट हमारे देश को तीव्र रूप से प्रभावित किया है। दूसरी बार सत्ता पर काबिज ब्राह्मणीय हिंदू फासीवादी मोदी सरकार ने साम्राज्यवाद-प्रायोजित एवं देश शासक वर्ग अनुकूल एजेंडे को लेकर आक्रामक रूप से बढ़ रही है। विदेशी कर्ज एवं विदेशी पूंजी आकर्षित करने के लिए देश की अर्थव्यवस्था को पूरी तरह उदारीकरण करने के तर्ज पर वह काम कर रही है। उससे लागू नीतियों की वजह से हमारे देश साम्राज्यवादियों का और पराधीन होता जा रहा है। देश

की जनता का भविष्य दिन-ब-दिन खतरे में पड़ रहा है। व्यापार घाटा बढ़ रहा है, कर्जों पर वह बेहद निर्भर है तथा अनुत्पादक खर्च बढ़ रहे हैं, देश के प्राकृतिक संसाधनों का साम्राज्यवादी बहुराष्ट्रीय कंपनियां का लूट बेहद बढ़ रही है, भ्रष्टाचार बढ़ रही है, फलतः देश में जनता की सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियां बदतर होती जा रही हैं। आर्थिक असमानताएं गंभीर स्तर तक पहुंच गयी हैं। देश में 9 धनाड्यों की संपदा देश में निचले स्तर के आधी आबादी की संपदा से बराबर है। मोदी सरकार की आर्थिक नीतियां अमीर को अमीर गरीब को और गरीब करने की दुष्ट-चक्र में धकेल रही हैं।

भारत की अर्ध-औपनिवेशिक एवं अर्ध-सामंती व्यवस्था में अधिकतर खेतिहर मजदूर-गरीब किसानों को जमीन नहीं मिलने, बेरोजगारी बढ़ने, वास्तविक वेतन घट जाने, जीवनव्यय बढ़ जाने, गरीबी, भुखमरी, बीमारी बेहद व्यापक हो जाने, कुल मिलाकर सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियां बदतर हो जाने की वजह से जनता तंगहाली में पिस रही है। भूमंडलीकरण ने हमारे देश की ग्रामीण-कृषि-प्रधान अर्थव्यवस्था पर विध्वंस मचा रही है। किसान बेहाल है। किसानों की आत्महत्याएं थमने का नाम नहीं ले रहा है। कृषि बाजार पर एकाधिकार चला रहे बहुराष्ट्रीय कंपनियों एवं उनके दलालों ने 'कारपोरेट खेती' एवं 'ठेका खेती' को विस्तार कर रहे हैं। कारपोरेट हितों के लिए लाखों आदिवासी-गैर-आदिवासी किसानों को विस्थापित कर रहे हैं। यही मोदी सरकार की नयी कृषि नीति का सार है। किसानों, क्रांतिकारी एवं जनवादी किसान संगठनों तथा किसान हितैषियों का हमारी पार्टी का आह्वान है कि इस 'कारपोरेट विकास नमूने' पर निर्भर नीतियों जो कृषि क्षेत्र को कभी नहीं उबरने वाले संकट में धकेल रही हैं, का भंडाफोड़ करते हुए सामंत-विरोधी, साम्राज्यवाद-कारपोरेट-विरोधी संघर्षों को तेज करें, इसके तहत जोतने वालों को जमीन मुफ्त बांटने की मांग को मुख्य रूप से उठायें।

हमारे देश पर साम्राज्यवादियों के वित्तीय हमले दो तरीके से हो रहे हैं। पहला, साम्राज्यवादी बहुराष्ट्रीय कंपनियों एवं अंतरराष्ट्रीय वित्त संस्थाओं के जरिए विदेशी पूंजी द्वारा प्रत्यक्ष हमला। दूसरा, साम्राज्यवादी बहुराष्ट्रीय कंपनियों से सांठगांठ होकर देश के दलाल नौकरशाह पूंजीपतियों द्वारा परोक्ष हमला। दोनों मामलों में भारतीय दलाल शासक वर्गों के अभिन्न हिस्से के तौर पर एजेंटों के रूप में रहे प्रधानमंत्रियों, मंत्रियों, मुख्यमंत्रियों एवं उच्च अधिकारियों, राजनीतिक, बौद्धिक एवं अन्य क्षेत्रों के एजेंटों ने मार्ग सुगम बना रहे हैं।

भूमंडलीकरण युग में जनता पर अपने शोषण व उत्पीड़न को और तेज करने के लिए फासीवादी सरकारों से अनछूये एवं उदारीकरण से परे कोई कानून नहीं है। ये सिलसिला बेरोकटोक जारी है। लोकसभा एवं विधानसभाओं के सदस्य कोई भी हो, किसी भी पार्टी के हो बेवजह सिर्फ छोटे-छोटे मसलों पर ही शोर मचाते हैं। ऐसा इसलिए करते हैं कि अपनी देशद्रोही कारतूतों पर परदा डाल सके। किंतु साम्राज्यवादियों, दलाल शोषक-शासक वर्गों के हितों को पूरा करने वाले विधेयकों को उनके आदेशों के मुताबिक किसी भी चर्चा के बिना, कोई भी समझे बिना शीघ्र पारित किया जाता है। इसी तरह न्यापालिका भी विदेशी एवं दलाल वित्तीय पूंजी का साधन के रूप में इस्तेमाल होते हुए मजदूरों, किसानों, छोटे उद्योगपतियों, महिलाओं, दलितों, आदिवासियों एवं मानवाधिकार व जन कल्याण पर भी प्रतिक्रियावादी फैसले सुना रही है। यानी कानूनसभाएं, शासनतंत्र एवं न्यायपालिका - तीनों ने साम्राज्यवादियों एवं दलाल शासक वर्गों के हितों के लिए आक्रामक रूप से काम कर रही हैं।

मोदी सरकार दूसरी बार सत्ता पर काबिज होने के बाद पहला बजट में देश को 2025 तक 5 लाख करोड़ डालर अर्थव्यवस्था एवं विश्व में तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में बदलने पर सिर्फ लफ्फाजी बात कर रही है। इसके लिए उसने 8 फीसदी जीडीपी वृद्धि हासिल करने की जो बात कर रही है, वह सरासर झूट है। इस बजट जनता पर कर-भार बढ़ाकर, देश अर्थव्यवस्था को 'मेक इन इंडिया' के नाम पर पूरी तरह बहुराष्ट्रीय कंपनियों एवं देश के बड़े पूंजीपतियों के निवेशों व शोषण का अड्डा बनाता है, इसके बजाय उसने जनता को गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी, आत्महत्याओं एवं खतरनाक बीमारियों से थोड़ा भी राहत नहीं दे सकता। उदाहरण के लिए, बीमारियों से शिकार होकर सैकड़ों बच्चों की मृत्यु का कारण बने पौष्टिक आहार की कमी को दूर करने के लिए बजट में कोई भी योजना/प्रावधान नहीं है। किसान बजट के नाम किसानों का आय दोगुणी करने, इसके लिए कृषि क्षेत्र के बुनियादी ढांचे पर अपने ध्यान केंद्रित करने का बात सिर्फ डींग मारने तक सीमित है जो मोदी-1 की शासन में ही साबित हो चुकी है। किसान सम्मान योजना अन्नदाताओं का भिखारियों के रूप में तब्दील कर दिया है। महिलाओं, दलितों, आदिवासियों, मुस्लिमों आदि उत्पीड़ित तबकों के समस्याओं के लिए इस बजट में कोई भी राहत नहीं है। अमीरों पर कर लगाने के नाम पर मोदी सरकार ने 500 करोड़ रूपये संपत्ति होने वालों पर प्रति रुपये सिर्फ 2 पैसे, 1000 करोड़ संपत्ति होने वालों पर प्रति रुपये

सिर्फ 3 पैसे कर लगाया। यही है मोदी बजट का स्वरूप।

दूसरी तरफ केंद्र सरकार ने क्रांतिकारी आंदोलनों, राष्ट्रीय-मुक्ति आंदोलनों एवं जनवादी आंदोलनों को सफाया करने के लिए एवं विस्तारवादी हितों के लिए रक्षा बजट में भारी वृद्धि की है। शिक्षा, स्वास्थ्य आदि जन कल्याण योजनाओं एवं सेवाओं के लिए राशि घटायी या तो नाम के वास्ते कर दी। केंद्र से ग्राम स्तर तक निरंकुश नौकरशाही में भ्रष्टाचार बेहद गंभीर हो गयी है। अर्ध-रोजगार पाने वालों में दरअसल अधिकतर बेरोजगार ही हैं। बेरोजगारी अपनी उच्चतम स्तर पर पहुंच गयी है।

मजदूरों, किसानों एवं मध्यम वर्ग के लोगों का वास्तविक वेतन का मूल्य घट रही है। उसी समय में उत्पादन में मंदी के कारण चीजों एवं सेवाओं में कमी आ रही है। व्यापक गरीबी, बार-बार फैलने वाली संक्रामक बीमारियां, स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी, सरकारी स्कूली व्यवस्था जर्जर हो जाना, पर्यावरण ध्वस्त हो जाना, पानी की किल्लत, लगातार बिजली में कटौती सहित शहरी बुनियादी सुविधाएं लड़खड़ाने की वजह से जनता की जीवन स्तर घट रही है। साम्राज्यवादियों एवं उनके बड़े दलाल-सामंती एजेंटों ने कई तरीकों से पर्यावरण को लगातार नुकसान पहुंचा रहे हैं। वनों की विध्वंस की दर बढ़ रही है। अक्सर बाढ़ एवं अकाल, भूक्षारण, भूगर्भ-जलों का विध्वंस, जैविक विविधता लुप्त हो जाना, नदियां सूख जाना, मछली शिकार बेहद घट जाना आदि पहले से ही जनता की जीवन में भारी तबाही मचा रही है।

दूसरी बार सत्ता पर काबिज होने वाली ब्राह्मणीय हिंदू फासीवादी मोदी सरकार का मुख्य एजेंडा यही है कि साम्राज्यवादी बहुराष्ट्रीय कंपनियों एवं देश के दलाल नौकरशाही पूंजीपतियों व सामंतियों के हितों को पूरा करना, इसके लिए देश में 'ब्राह्मणीय हिंदू राज्य' यानी फासीवादी राज्य की स्थापना। एक भारत, श्रेष्ठ भारत एवं नया भारत निर्माण के नाम पर उसके द्वारा प्रस्तावित 'हिंदू राज्य' - देश के उत्पीड़ित वर्गों, उत्पीड़ित तबकों एवं उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं के लिए पूरी तरह खिलाफ है। वह सत्ता में आकर दो महीने भी नहीं हुआ, देशभर में हमारे आंदोलनों के इलाकों पर सरकारी सशस्त्र बलो के क्रूर हमलें, मुस्लिमों, दलितों, महिलाओं, आदिवासियों पर, कश्मीर एवं उत्तर-पूर्व के उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं पर ब्राह्मणीय हिंदू फासीवादी हमले तेज हो गयीं। संसद में भी 'जय श्रीराम' का नारा गूंज रहा है। मुस्लिमों को देखते ही अपमानित कर रहे हैं, 'जय श्रीराम', 'भारत माता की जय' के नारे कहने का हुकुम देते हुए मारपीट कर रहे

हैं, 'भीड़ की हत्याएं' (मोब लिंचिंग) कर रहे हैं, 'गोरक्षा' के नाम पर मुस्लिमों, दलितों एवं आदिवासियों को हत्या करना, दलितों एवं आदिवासियों को जाति के नाम पर गालियां देकर अपमानित करना, जान से जला देना, आत्महत्या करने पर मजबूर करना, अपने हुकुम लागू नहीं करने एवं उन्हें सहयोग नहीं करने वाले सरकारी कर्मचारियों पर हमले करना 'नया मनु' की शासन में आम बात बन गयी। कश्मीर एवं उत्तर-पूर्व राष्ट्रीयताओं के जनता पर सरकारी सशस्त्र बल सीधा युद्ध ही चला रहे हैं। मोदी सरकार ने नागरिकता संशोधन कानून लाकर असम में लाखों लोगों को अनिश्चितता एवं असुरक्षा की स्थिति में धकेल दिया, हजारों लोगों को जेल जैसे कारा शिविरों में बंदी बनाया, इसके अलावा अभी तक 50 लोग आत्म'हत्याएं' करने की स्थिति पैदा की। सरकारी सशस्त्र बलों के मदद से उत्तर-पूर्व इलाके में दिन-ब-दिन हिंदू फासीवादी शक्तियों की कारनामे बढ़ रहे हैं। उपा, अफ्सपा जैसे फासीवादी कानूनों को टाडा से भी निरंकुश बनाया। इस तरह के कानूनों एवं राज्यहिंसा के खिलाफ देशभर में जारी जनांदोलनों को एवं क्रांतिकारी, जनवादी तथा राष्ट्रीय-मुक्ति आंदोलनों के लिए प्राप्त होने वाली अंतरराष्ट्रीय समर्थन को क्रूरता से कुचलने के लक्ष्य से मोदी सरकार ने देश में आतंकवाद का सफाया करने के नाम पर 'एनआईए संशोधन बिल-2019', 'उपा संशोधन बिल-2019' को लायी है। केंद्र एवं राज्य मानवाधिकार आयोगों को ब्राह्मणीय हिंदू फासीवादी तत्वों से लपेटने, देश के उत्पीड़ित वर्गों, तबकों एवं राष्ट्रीयताओं का नाममात्र मानवाधिकार को भी कुचलने की साजिश कर 'मानवाधिकार संरक्षण संशोधन बिल-2019' को लायी है। जनवादियों एवं जनता द्वारा लड़कर हासिल किये गये 'सूचना अधिकार कानून-2005' को तबाह कर 'सूचना अधिकार कानून संशोधन बिल-2019' को लायी है। इस तरह कई निरंकुश बिल को पारित करते हुए राज्य को खुलेआम फासिजीकरण करते हुए उसने देशभर में एक बड़ी फासीवादी हमले के लिए मैदान तैयार कर रही है। सत्तारूढ़ ब्राह्मणीय हिंदू फासीवादी गुट ने देश में विपक्ष को भी सफाया करने की बड़े षड़यंत्र के साथ 'दल बदल विरोधी कानून' को भी कुचलते हुए कई राज्यों में विधायकों को, लोकसभा व राज्यसभा में संसदों को भी पैसों से खरीद-फरोक्त कर रही है, समझा-बुझाकर या डरा-धमकाकर उन्हें पालतू बना रही है। इस फासीवादी गुट के कारनामों के खिलाफ जनप्रतिरोध दिन-ब-दिन देशभर में विस्तारित हो रही है। इसे एकजुटता, और जुझारू एवं संगठित रूप से विकसित करने की आवश्यकता है।

हमारे आंदोलन के इलाकों में पहले से ही केंद्र एवं राज्य सरकारें (राज्यों में सत्ता में जो भी पार्टी हो) संयुक्त रूप से कार्पेट सुरक्षा व्यवस्था को और विस्तारित एवं मजबूत करते हुए 6 लाख पुलिस, अर्धसैनिक एवं कमांडो बलों को तैनात की है। जनता पर अंधाधुंध गोलीबारी करना-हत्या करना, तोपों से बमबारी करना, नरसंहारों को अंजाम देना, बड़े पैमाने पर गिरफ्तारी करना, यातना देना, झूठी मुठभेड़ों में हत्या करना, महिलाओं को अपमानित करना, अत्याचार कर-हत्या की जा रही है। गुरिल्ला बेसों को ध्वस्त कर, पीएलजीए के लिए मजबूत एवं विश्वसनीय जगहों में भारी पैमाने पर छानबीन एवं विध्वंस करने के ऑपरेशनों को अंजाम देकर जनता को बलपूर्वक विस्थापित किया जा रहा है। सरकारें देशभर में क्रांतिकारी शक्तियों, हमारी पार्टी, पीएलजीए एवं संयुक्तमोर्चा का सफाया करने एवं विघाटन करने के लक्ष्य से संपूर्ण चौतरफा हमलों की युद्ध-नीति के साथ कुचलने-उन्मूलन करने (नरसंहार) अभियानों (ऑपरेशनों) को अंजाम दे रही हैं। इसके तहत संपूर्ण स्तर पर मनौवैज्ञानिक युद्ध की कार्यनीति को तैयार कर लागू कर रही हैं। यानी नक्सलवादी हिंसावादी हैं, विकास विरोधी हैं, देशद्रोही हैं, जनविरोधी हैं, आदिवासियों व दलितों को हत्या कर रहे हैं, कहकर बड़े पैमाने पर दुष्प्रचार करना, आत्मसमर्पण नीति को लागू करना, सरेंडर होने वालों को गद्दार बनाना, पुनरावास सुधार कार्यक्रम लागू करना, गद्दारों को पुलिस, अर्धसैनिक एवं कमांडो विशेष बलों में शामिल कर, जनता के खिलाफ आपराधिक हमले करना आदि। दुश्मन के भारी स्तर के सैनिक अभियानों की वजह से जनता बेहद मुश्किलों का सामना कर रही है। ये सब न सिर्फ आक्रामक रूप से दुश्मन द्वारा लागू कार्यनीति का, बल्कि उनके अंदर बढ़ती निराशा का भी संकेत है। दुश्मन के इन कार्यनीति के बारे में और जागरूक होकर, उन्हें हिम्मत से मुकाबला करने के लिए सैद्धांतिक, राजनीतिक, सैनिक, सांगठनिक एवं सांस्कृतिक रूप से और संगठित चेतना एवं एकजुटता से हमारी पार्टी, पीएलजीए, विभिन्न क्रांतिकारी जनसंगठन एवं जनसत्ता के इकाइयों तथा क्रांतिकारी जनता को तैयार होनी चाहिए।

प्रिय कामरेडो एवं जनता!

हमारे 50 वर्षों के पार्टी इतिहास को देखा जाये, तो साबित हुआ कि हमारी लाइन सही है। इस लंबे समयकाल में हमारी पार्टी ने कई उतार-चढ़ावों, मोड़ों-घुमावों का सामना करते हुए बहुमूल्य अनुभव आर्जित करते हुए पार्टी लाइन को और समृद्ध बनायी है। पार्टी बहुत ही फौलाद बन गयी। इस दौरान

दुश्मन के हमले एवं पार्टी में अनुभवहीनता, गलतियों व दक्षिणपंथी, वामपंथी रुझानों के कारण आंदोलन एवं पार्टी ने जो गंभीर नुकसानों एवं पीछेहटों का सामना किया वे सभी अस्थायी ही है। हमें हमारी पार्टी लाइन पर दृढ़ता से अडिग रहकर, पार्टी एवं जनता पर विश्वास रखकर प्रयास करने से वर्तमान क्रांतिकारी आंदोलन की कठिन दौर से उबार कर, आंदोलन को आगे बढ़ा सकते हैं। इसके लिए इस विशाल अनुभव हमें बहुत ही मददगार साबित होंगी। आइये! हमें इस विशाल क्रांतिकारी अनुभव पर आधारित होकर तीन जादुई हथियारों को मजबूत करने दृढ़संकल्प के साथ प्रयास करें! अंतरराष्ट्रीय एवं देशयी स्तर पर क्रांति के लिए अनुकूल परिस्थितियों का पूरी तरह सदुपयोग करने के लिए पहलकदमी लें! हमारे देश में नवजनवादी क्रांति को, अंत में समाजवाद-साम्यवाद को स्थापित करने के लिए उत्पीड़ित वर्गों, उत्पीड़ित तबकों एवं राष्ट्रीयताओं के लोगों को मुक्ति की रास्ते पर बढ़ाएं! हमारी पार्टी के नेतृत्व में जारी दीर्घकालीन जनयुद्ध में लाखों-करोड़ो उत्पीड़ित-शोषित जनता को गोलबंद करते हुए जनयुद्ध को देशभर में विस्तारित करें! इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए आज हमारी पार्टी को सैद्धांतिक, राजनीतिक, सैनिक एवं सांगठनिक तौर पर मजबूत करें! हमारी पार्टी की 50वीं वर्षगांठ समारोहों के अवसर पर आगामी वर्षों में हमारी ताकत बढ़ाते हुए बड़ी सफलताएं हासिल करने के लिए कदम बढ़ाएं! साबित करें कि हमारे देश में ब्राह्मणीय हिंदू फासीवादियों सहित विश्वभर में सभी फासीवादियों एवं प्रतिक्रियावादी सिर्फ कागजी बाघ हैं, अंत में उनकी पतन अनिवार्य है एवं अंतिम जीत उत्पीड़ित जनता की ही होगी।

☆ मजूदर, किसान, छात्र एवं बुद्धिजीवी एकता जिंदाबाद!

☆ पार्टी, पीएलजीए एवं संयुक्तमोर्चा जिंदाबाद!

☆ मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद जिंदाबाद!

☆ भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) जिंदाबाद!

☆ नवजनवादी क्रांति जिंदाबाद!

☆ विश्व समाजवादी क्रांति जिंदाबाद!

क्रांतिकारी अभिवाद के साथ

केंद्रीय कमेटी

24 जुलाई, 2019 **भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)**